पेरिस
अगस्त ३०, २००६

सन्देश संख्या १७४

फातिमा (पुर्तगाल)–रिट्रीट का एक प्रश्न

हाल में सम्पन्न हुए फातिमा (पुर्तगाल)–रिट्रीट के दौरान एक क्रियावान ने शिवेन्दु से पूछा : अब तक आपने कितने लोगों को समाधि में देखा है ? शिवेन्दु ने उत्तर दिया – एक भी नहीं, किन्तु मेरे पिताजी ने एक व्यक्ति को देखा था और यह स्तब्ध करने वाली एक सच्ची कहानी है –

कोलकाता में दर्शनशास्त्र के एक प्रोफेसर थे । वे क्रियावान (तिनकौड़ी लाहिड़ी के शिष्य) थे तथा अत्यन्त शान्त और प्रज्ञावान थे । वे वहाँ के एक पुराने एवं छोटे फ्लैट के दूसरे तल्ले पर रहते थे । फ्लैट के मुख्य द्वार के बाहर एक लम्बा खुला गलियारा था । वहाँ और भी कई फ्लैट एक–दूसरे से सटे हुए थे । गलियारे के सामने ही व्यस्त सड़क थी । वहाँ के निवासियों को सड़क के शोरगुल और हो–हल्ला के साथ स्थायी सम्बन्ध था ।

एक दिन उनका एक मित्र उनसे मिलने आया और उन दोनों ने उस गलियारे में ही बैठकर बातचीत करने का निश्चय किया । प्रोफेसर साहब की पत्नी ने अपने युवा पुत्र को कहा कि अतिथि के लिए सड़क की दूसरी तरफ जाकर कुछ समोसे और मिठाइयाँ ले आओ, तब तक मैं चाय बनाती हूँ। प्रोफेसर और उनके मित्र आपस में बातें कर रहे थे तथा वे देख भी रहे थे कि पुत्र दुकान जाने के लिए सड़क पार कर रहा था। उसने तेजी से आ रही ट्रक को नहीं देखा और जब तक ट्रक–चालक ब्रेक लगाता तब तक ट्रक उस लड़के से टकरा गई और लड़का ट्रक के पहिए के नीचे आकर कुचल गया । इस भयानक दृश्य को देखकर वहीं पर खड़ी उसकी माँ गिरकर बेहोस हो गई। ट्रक के चारों और भीड़ जमा हो गई, जैसा कि प्रायः भारत में होता है, और लोग ट्रक–चालक को बुरी तरह पीटने लगे । वहाँ बैठा हुआ पिता अपने पुत्र को मृत देखकर, अपने मित्र के साथ नीचे सड़क पर गया और लोगों से निवेदन किया कि वे ट्रक–चालक को पुलिस को सौंप दें और मृत शरीर के दाह–संस्कार की व्यवस्था में उसकी सहायता करें । जैसे ही लोगों ने जाना कि यह शान्तचित्त व्यक्ति मृत लड़के का पिता है, वहाँ सन्नाटा छा गया और उपस्थित लोग स्तब्ध रह गए । प्रोफेसर साहब के मित्र जो उस समय वहाँ उपस्थित थे, वे शिवेन्दु के पिता सत्यचरण लाहिड़ी ही थे । यह घटना १९५८ के प्रारम्भ की है । यह समाधि की, समता की ऊर्जा की और प्रज्ञा में दृढ़तापूर्वक स्थापित होने की अवस्था है जिसमें जीवन में असाधारण चुनौती आ जाने पर भी व्यक्ति अपनी समता की ऊर्जा नहीं खोता। समाधि की अवस्था में व्यक्ति संसार के सभी कार्यों को सहजतापूर्वक करता रहता है न कि इंटरनेट पर अपने को प्रचारित करने के उद्देश्य से मौनी बाबा बनकर समाधि का पाखण्ड करता है ।

समाधि की मुद्रा में बैठने का पाखण्ड करने वाले आध्यात्मिक–ठग की अपेक्षा असली धोखेबाज होना ज्यादा अच्छा है । अपने भीतर तुमने जो भी विकार आध्यात्मिक मण्डी से जमा कर रखे हैं, उन्हें बाहर निकालना आवश्यक है । तुम अपने किसी प्रयास या इच्छाशक्ति से उस विकार को बाहर नहीं कर सकते क्योंकि तुम ही विकार हो । क्या तुम ठहर सकते हो और चुप रह सकते हो? तुम आध्यात्मिक सन्दर्भ में अपनी मूर्खतापूर्ण छवियों एवं आदर्शों के साथ एक बन्दर के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो ।

पुरोहितों को कृष्ण, शिव, बुद्ध, यीशु, मुहम्मद आदि को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने दिखावा, पाखण्ड एवं धोखा के माध्यम से या पुरोहिती प्रपंच के द्वारा उन्हें आजीविका चलाने का आसान मार्ग प्रदान किया ।

झूठी आशाओं, अपेक्षाओं तथा उनके अनुबन्धित प्रतिबिम्बों के रूप में होने वाले अनुभवों की हत्या ही प्रेम है, जीवन है, चैतन्य और सजगता है ।

।। सजगता की जय हो ।।